



CHETANA
International Journal of Education (CIJE)

Peer Reviewed/Refereed Journal
ISSN : 2455-8279 (E)/2231-3613 (P)

Impact Factor
SJIF 2026-8.584



Prof. A.P. Sharma
Founder Editor, CIJE
(25.12.1932 - 09.01.2019)

श्रीमाधोपुर नगर की वर्तमान नगरीय आकारिकी: भूमि उपयोग, आवासीय प्रतिरूप एवं वाणिज्यिक विस्तार का भौगोलिक विश्लेषण

विष्णु दत्त मीणा

सहायक आचार्य (भूगोल),

राजकीय कन्या महाविद्यालय श्रीमाधोपुर (सीकर)

शोधार्थी, भूगोल विभाग

पंडित दीनदयाल उपाध्याय शेखावाटी विश्वविद्यालय, सीकर (राजस्थान)

डॉ. मनोज कुमार

आचार्य, भूगोल विभाग

सेठ नेतराम मधराज टीबडेवाल राजकीय महिला महाविद्यालय, झुंझुनू (राजस्थान)

First draft received: 19.08.2026, Reviewed: 26.08.2026

Final proof received: 29.08.2026, Accepted: 29.09.2026

सार-संक्षेप

नगरीय आकारिकी किसी नगर के भौतिक स्वरूप, भूमि उपयोग, आवासीय संरचना, आर्थिक गतिविधियों, सार्वजनिक सुविधाओं तथा परिवहन संपर्क के स्थानिक संगठन को समझने का महत्वपूर्ण आधार है। वर्तमान नगरीय आकारिकी केवल निर्मित क्षेत्र के विस्तार का परिणाम नहीं होती, बल्कि यह ऐतिहासिक विकास, जनसंख्या वृद्धि, भूमि उपयोग परिवर्तन, आवासीय विस्तार, व्यापारिक गतिविधियों तथा क्षेत्रीय संपर्क व्यवस्था के संयुक्त प्रभाव से निर्मित होती है। प्रस्तुत शोध-पत्र में राजस्थान के सीकर जिले में स्थित श्रीमाधोपुर नगर की वर्तमान नगरीय आकारिकी का भौगोलिक विश्लेषण किया गया है।

अध्ययन में भूमि उपयोग प्रतिरूप, वार्ड संरचना, जनसंख्या वितरण, आवासीय प्रतिरूप, पारंपरिक एवं उभरते वाणिज्यिक क्षेत्रों, औद्योगिक गतिविधियों, सार्वजनिक सुविधाओं तथा परिवहन संपर्क को आधार बनाया गया है। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि श्रीमाधोपुर नगर का वर्तमान स्वरूप एकरूप नहीं है। नगर के केंद्रीय भाग में पुरानी बसावट, सघन आवासीय क्षेत्र, चौपड़-केंद्रित पारंपरिक बाजार तथा मिश्रित भूमि उपयोग प्रमुख हैं, जबकि बाहरी भागों में नवीन आवासीय कॉलोनियाँ, कृषि भूमि, रिक्त भूखंड, ढाणी-आधारित बसावट तथा ग्रामीण-नगरीय संक्रमण क्षेत्र पाए जाते हैं। इस प्रकार नगर में केंद्रीय सघनता और परिधीय विस्तार का सह-अस्तित्व दिखाई देता है।

वाणिज्यिक संरचना में चौपड़ पारंपरिक केंद्रीय व्यापारिक नाभिक के रूप में कार्य करता है। इसके साथ स्टेशन रोड, खंडेला रोड, बाईपास, राज्य राजमार्ग तथा कृषि उपज मंडी के आसपास नए सड़क-आधारित एवं सेवा-आधारित वाणिज्यिक क्षेत्र विकसित हो रहे हैं। इससे नगर में रेखीय तथा उभरते हुए बहु-केंद्रीय वाणिज्यिक विकास की प्रवृत्ति दिखाई देती है। अध्ययन का निष्कर्ष है कि श्रीमाधोपुर वर्तमान में पारंपरिक कस्बाई संरचना से विकसित होते हुए एक संक्रमणशील नगरीय केंद्र का स्वरूप ग्रहण कर रहा है। अतः भविष्य के विकास के लिए भूमि उपयोग नियोजन, परिधीय क्षेत्रों में आधारभूत सुविधाओं का पूर्व-विकास, यातायात प्रबंधन, हरित क्षेत्रों का संरक्षण तथा केंद्रीय बाजार के सुव्यवस्थित पुनर्गठन की आवश्यकता है।

मुख्य-शब्द - नगरीय आकारिकी, भूमि उपयोग, आवासीय प्रतिरूप, वाणिज्यिक विस्तार, ग्रामीण-नगरीय संक्रमण, श्रीमाधोपुर।

प्रस्तावना

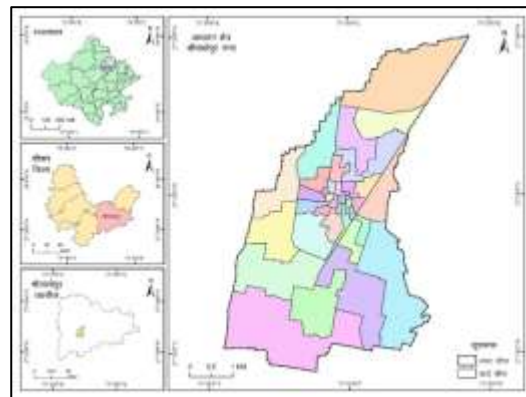
नगरीय आकारिकी का संबंध किसी नगर के भौतिक स्वरूप, स्थानिक संगठन तथा विभिन्न नगरीय कार्यों के वितरण से है। किसी नगर का वर्तमान स्वरूप उसके ऐतिहासिक विकास, जनसंख्या वृद्धि, भूमि उपयोग, आवासीय विस्तार, व्यापारिक एवं औद्योगिक गतिविधियों, परिवहन संपर्क तथा सार्वजनिक सुविधाओं के विकास से निर्मित होता है। इसलिए वर्तमान नगरीय आकारिकी का अध्ययन केवल निर्मित क्षेत्र की सीमा और विस्तार तक सीमित नहीं रहता, बल्कि नगर के विभिन्न कार्यात्मक क्षेत्रों तथा उनके परस्पर स्थानिक संबंधों को समझना भी आवश्यक होता है।

श्रीमाधोपुर नगर का वर्तमान स्वरूप पुराने केंद्रीय भाग तथा समय के साथ विकसित हुए नवीन आवासीय एवं परिधीय क्षेत्रों के सह-अस्तित्व को प्रदर्शित करता है। केंद्रीय भाग में पुरानी बसावट, सघन आवासीय क्षेत्र, पारंपरिक बाजार तथा मिश्रित भूमि उपयोग प्रमुख हैं। इसके विपरीत बाहरी क्षेत्रों में नई आवासीय कॉलोनियाँ, कृषि भूमि, रिक्त भूखंड तथा ग्रामीण-नगरीय संक्रमण क्षेत्र दिखाई देते हैं। इससे नगर के विभिन्न भागों में बसावट की सघनता, भूमि उपयोग तथा विकास की प्रकृति में स्थानिक अंतर स्पष्ट होता है।

श्रीमाधोपुर नगर का अध्ययन इसलिए महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह एक ऐसे नगर का उदाहरण प्रस्तुत करता है जहाँ पारंपरिक कस्बाई संरचना के साथ-साथ आधुनिक आवासीय विस्तार, सड़क-आधारित व्यापारिक विकास तथा परिधीय भूमि उपयोग परिवर्तन की प्रक्रिया चल रही है। इस

प्रकार यह नगर छोटे एवं मध्यम आकार के भारतीय नगरों में हो रहे क्रमिक नगरीकरण और ग्रामीण-नगरीय संक्रमण को समझने के लिए उपयोगी अध्ययन क्षेत्र प्रदान करता है।

अध्ययन क्षेत्र



Source: Prepared by the researcher using QGIS

श्रीमाधोपुर नगर राजस्थान राज्य के उत्तर-पूर्वी भाग में स्थित सीकर जिले के दक्षिण-पूर्वी भाग में अवस्थित एक महत्वपूर्ण नगरीय केन्द्र है। यह लगभग 27°28' उत्तरी अक्षांश तथा 75°36' पूर्वी देशांतर पर स्थित है तथा समुद्र तल से इसकी औसत ऊँचाई लगभग 480 मीटर है। भौगोलिक दृष्टि से यह क्षेत्र मुख्यतः समतल एवं अल्प-तरंगित मैदानी भू-भाग से निर्मित है, जो नगरीय विस्तार, कृषि गतिविधियों तथा आवासीय विकास के लिए अनुकूल परिस्थितियाँ प्रदान करता है।

क्षेत्रीय दृष्टि से श्रीमाधोपुर नगर का स्थान महत्वपूर्ण है। यह सीकर एवं जयपुर जिलों के मध्य स्थित होने के कारण क्षेत्रीय संपर्क केन्द्र के रूप में विकसित हुआ है। नगर राज्य राजमार्ग-37 से जुड़ा हुआ है तथा निकटवर्ती नगरीय केन्द्रों एवं ग्रामीण क्षेत्रों से सड़क नेटवर्क द्वारा संपर्क स्थापित करता है। प्रशासनिक दृष्टि से श्रीमाधोपुर एक नगरपालिका क्षेत्र है, जिसमें कुल 35 वार्ड सम्मिलित हैं। नगर की वर्तमान सीमा में पारंपरिक बसावटों के साथ-साथ नवीन आवासीय कॉलोनियाँ, वाणिज्यिक क्षेत्र तथा ग्रामीण-नगरीय संक्रमण क्षेत्र भी सम्मिलित हैं। जनसंख्या वृद्धि एवं नगरीकरण की प्रक्रिया के कारण नगर की सीमा में समय-समय पर विस्तार हुआ है।

जनसंख्या स्थिति

श्रीमाधोपुर नगर की जनसंख्या में समय के साथ उतार-चढ़ाव की प्रवृत्ति दिखाई देती है। वर्ष 1901 में नगर की जनसंख्या 6,892 थी, जो वर्ष 2011 में बढ़कर 31,366 हो गई। वर्ष 1951-1961 के दौरान जनसंख्या वृद्धि दर 39.59 प्रतिशत तथा 1971-1981 के दौरान 79.34 प्रतिशत रही, जो नगरीय विस्तार, व्यापारिक गतिविधियों तथा प्रशासनिक महत्त्व में वृद्धि को दर्शाती है। इसके विपरीत 1961-1971 के दशक में जनसंख्या वृद्धि दर -10.91 प्रतिशत रही। वर्ष 1991, 2001 तथा 2011 में वृद्धि दर क्रमशः 29.42 प्रतिशत, 19.26 प्रतिशत तथा 10.09 प्रतिशत दर्ज की गई।

1981-2011 की औसत दशकीय वृद्धि दर 19.59 प्रतिशत को आधार बनाकर वर्ष 2021 की जनसंख्या का प्रक्षेपण किया गया। इसके अनुसार वर्ष 2021 में श्रीमाधोपुर नगर की प्रक्षेपित जनसंख्या लगभग 37,500 प्राप्त होती है। यह नगर में जनसंख्या वृद्धि की निरंतरता तथा भविष्य में आवासीय, वाणिज्यिक एवं सार्वजनिक सुविधाओं की बढ़ती आवश्यकता को इंगित करती है।

जनगणना 2011 के अनुसार नगर की कुल जनसंख्या 31,366 है, जिसमें 16,499 पुरुष तथा 14,867 महिलाएँ हैं। 0-6 आयु वर्ग की जनसंख्या 3,840 है, जो कुल जनसंख्या का लगभग 12.24 प्रतिशत है। नगर की कुल साक्षरता दर 83.53 प्रतिशत है, जबकि पुरुष साक्षरता दर 93.69 प्रतिशत तथा महिला साक्षरता दर 72.45 प्रतिशत है। इससे पुरुष एवं महिला साक्षरता में अंतर स्पष्ट होता है।

सामाजिक संरचना की दृष्टि से अनुसूचित जाति की जनसंख्या 16.80 प्रतिशत तथा अनुसूचित जनजाति की जनसंख्या 2.39 प्रतिशत है। धार्मिक संरचना में हिन्दू समुदाय की भागीदारी 94.90 प्रतिशत तथा मुस्लिम समुदाय की 4.61 प्रतिशत है। इसके अतिरिक्त सिख, जैन, ईसाई एवं अन्य धार्मिक समुदायों की संख्या अपेक्षाकृत कम है। नगर की सामाजिक एवं धार्मिक संरचना का प्रभाव मोहल्लों के गठन, बसावट के स्वरूप तथा सामाजिक-सांस्कृतिक गतिविधियों के स्थानिक वितरण पर भी दिखाई देता है।

अध्ययन के उद्देश्य

1. श्रीमाधोपुर नगर की वर्तमान नगरीय आकारिकी का अध्ययन करना।
2. नगर के केंद्रीय, आंतरिक तथा परिधीय भागों के स्थानिक स्वरूप का विश्लेषण करना।
3. वर्तमान भूमि उपयोग प्रतिरूप तथा उसके नगरीय आकारिकी पर प्रभाव का अध्ययन करना।
4. पुराने एवं नवीन आवासीय क्षेत्रों के स्वरूप में पाए जाने वाले अंतर को स्पष्ट करना।
5. पारंपरिक केंद्रीय बाजार तथा उभरते हुए वाणिज्यिक उपकेन्द्रों का विश्लेषण करना।
6. परिवहन मार्गों एवं क्षेत्रीय संपर्क का नगरीय विस्तार पर प्रभाव समझना।
7. भविष्य के संतुलित एवं सतत नगरीय विकास के लिए सुझाव प्रस्तुत करना।

आंकड़ों के स्रोत एवं अध्ययन विधितंत्र

प्रस्तुत अध्ययन में प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनों प्रकार के आंकड़ों का उपयोग किया गया है। प्राथमिक आंकड़े क्षेत्रीय सर्वेक्षण, प्रत्यक्ष अवलोकन तथा नगर के विभिन्न भागों के स्थल निरीक्षण से प्राप्त किए गए। द्वितीयक आंकड़ों के लिए जनगणना प्रकाशनों, नगरपालिका अभिलेखों, नगर मानचित्र, मास्टर प्लान तथा उपलब्ध प्रशासनिक दस्तावेजों का उपयोग किया गया।

स्थानिक विश्लेषण के लिए नगरपालिका से प्राप्त वाई मानचित्र को जियो-रेफरेंसिंग कर उपग्रह छवियों के साथ समायोजित किया गया। इसके बाद सड़क नेटवर्क, निर्मित क्षेत्र, कृषि भूमि, रिक्त भूमि, प्राकृतिक एवं कृत्रिम सीमाओं को ध्यान में रखते हुए वार्डवार सीमांकन किया गया। प्रत्येक वार्ड को पृथक पॉलीगॉन के रूप में डिजिटलाइज कर क्षेत्रफल एवं परिधि की गणना की गई।

अध्ययन में क्षेत्रीय सर्वेक्षण एवं प्रत्यक्ष अवलोकन, उपग्रह छवियों की दृश्य व्याख्या, जियो-रेफरेंसिंग एवं डिजिटलाइजेशन, वार्डवार क्षेत्रफल एवं परिधि विश्लेषण, भूमि उपयोग वर्गीकरण, स्थानिक एवं तुलनात्मक विश्लेषण, वर्णनात्मक एवं गुणात्मक विश्लेषण तकनीकों का उपयोग किया गया।

परिणाम एवं विश्लेषण

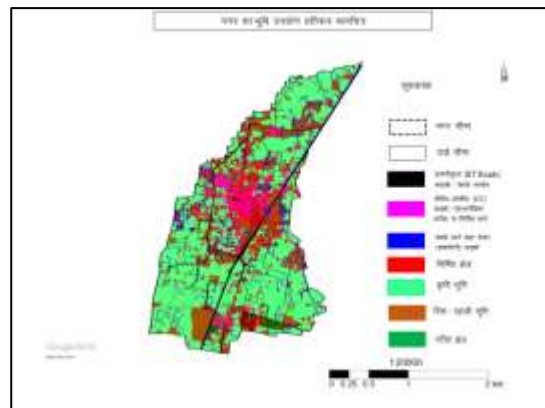
नगर की केंद्रीय एवं परिधीय संरचना

अध्ययन से स्पष्ट होता है कि श्रीमाधोपुर नगर की वर्तमान आकारिकी में केंद्रीय सघनता तथा परिधीय विस्तार दोनों प्रमुख रूप से विद्यमान हैं। पुराने केंद्रीय भाग में पारंपरिक बाजार, सघन आवासीय क्षेत्र, संकरी गलियाँ तथा मिश्रित भूमि उपयोग पाया जाता है। इन क्षेत्रों में भवन एक-दूसरे से सटे हुए हैं और उपलब्ध भूमि का उपयोग अपेक्षाकृत अधिक तीव्रता से किया गया है।

इसके विपरीत नगर के बाहरी भागों में नवीन आवासीय कॉलोनियाँ, कृषि भूमि, रिक्त भूखंड, ढाणी-आधारित बसावट तथा ग्रामीण-नगरीय संक्रमण क्षेत्र पाए जाते हैं। इन क्षेत्रों में भूमि उपयोग परिवर्तन की प्रक्रिया अभी जारी है। कई स्थानों पर आवासीय निर्माण हो चुका है, जबकि उनके आसपास कृषि भूमि तथा निर्माणरहित भूखंड अभी भी विद्यमान हैं। इससे स्पष्ट होता है कि नगर का विस्तार एक साथ पूर्ण न होकर क्रमिक एवं चरणबद्ध रूप से हो रहा है।

भूमि उपयोग प्रतिरूप

श्रीमाधोपुर नगर के भूमि उपयोग प्रतिरूप में कृषि भूमि का महत्वपूर्ण स्थान है। नगरपालिका सीमा के अंतर्गत कृषि भूमि, रिक्त भूमि तथा ग्रामीण-नगरीय संक्रमण क्षेत्र का पर्याप्त विस्तार यह दर्शाता है कि नगर की प्रशासनिक सीमा में अभी भी ग्रामीण भू-दृश्य के अनेक तत्व विद्यमान हैं।



Source: Prepared by the researcher using Google Earth Pro

निर्मित क्षेत्र का संकेन्द्रण मुख्यतः ऐतिहासिक नगर, केंद्रीय व्यापारिक क्षेत्र, आवासीय क्षेत्रों तथा संस्थागत परिसरों में पाया जाता है। इसके विपरीत बाहरी भागों में कृषि भूमि, रिक्त भूखंड तथा ढाणी-आधारित बसावट प्रमुख हैं। परिवहन भूमि उपयोग में केंद्रीय भागों में पक्की सड़कों का अपेक्षाकृत सघन जाल मिलता है, जबकि बाहरी क्षेत्रों में कच्चे एवं ग्रेवल मार्गों की उपस्थिति दिखाई देती है।

हरित क्षेत्र का विस्तार सीमित है। हरित क्षेत्र मुख्यतः संस्थागत परिसरों, धार्मिक स्थलों, श्मशान एवं कब्रिस्तान क्षेत्रों तथा सड़क किनारे वृक्षावरण के रूप में पाया जाता है। इससे नगर में संगठित हरित अवसंरचना की कमी का संकेत मिलता है।

भूमि उपयोग प्रतिरूप से यह निष्कर्ष निकलता है कि श्रीमाधोपुर में पारंपरिक ग्रामीण भूमि उपयोग का क्रमिक रूप से आवासीय, वाणिज्यिक तथा अन्य नगरीय उपयोगों में परिवर्तन हो रहा है। नगर का विस्तार मुख्यतः परिधीय क्षेत्रों की ओर दिखाई देता है।

आवासीय प्रतिरूप

श्रीमाधोपुर के आवासीय प्रतिरूप में पुराने एवं आधुनिक आवासों का सह-अस्तित्व प्रमुख विशेषता है। ऐतिहासिक एवं केंद्रीय भागों में

पारंपरिक आवास, हवेलियाँ तथा मिश्रित आवासीय-वाणिज्यिक भवन अधिक पाए जाते हैं। इन क्षेत्रों में भवनों के बीच खुला स्थान सीमित है तथा गलियाँ संकरी, घुमावदार और अनियमित स्वरूप की हैं।

केंद्रीय क्षेत्रों में भवनों के भूतल का उपयोग कई स्थानों पर दुकानों, पारिवारिक व्यवसायों तथा छोटे सेवा-प्रतिष्ठानों के लिए किया जाता है, जबकि ऊपरी मंजिलों का उपयोग आवासीय प्रयोजनों के लिए होता है। यह मिश्रित उपयोग नगर की पारंपरिक कस्बाई आकारिकी को व्यक्त करता है।

नवीन आवासीय कॉलोनियों में भवनों का निर्माण अपेक्षाकृत योजनाबद्ध रूप में हुआ है। इन क्षेत्रों में पक्की चारदीवारी, प्रवेश द्वार, पार्किंग स्थान, बालकनी, खुले आंगन तथा आधुनिक भवन विन्यास दिखाई देते हैं। हालांकि, कई नवीन कॉलोनियों में निर्मित भवनों के साथ निर्माणरहित भूखंड भी पाए जाते हैं। इससे स्पष्ट होता है कि नवीन आवासीय विकास क्रमिक एवं असमान है।

नगर के बाहरी कृषि-प्रधान क्षेत्रों में ढाणी-आधारित ग्रामीण आवास अभी भी विद्यमान हैं। इन आवासों के आसपास खुला भूभाग पशुपालन, कृषि उपकरणों के भंडारण, चारा संग्रहण तथा अन्य कृषि-आधारित कार्यों के लिए उपयोग किया जाता है। इस प्रकार ग्रामीण आवासीय प्रतिरूप नगर की बदलती आकारिकी में ग्रामीण जीवन शैली की निरंतरता को प्रदर्शित करता है।

पारंपरिक केंद्रीय व्यापारिक क्षेत्र

श्रीमाधोपुर की वाणिज्यिक संरचना का विकास मुख्यतः चौपड़ को केंद्रीय व्यापारिक नाभिक मानकर हुआ है। चौपड़ के पश्चिम में सीकर बाजार, उत्तर में खंडेला बाजार, दक्षिण में रींगस बाजार तथा पूर्व में लोहारु बाजार स्थित हैं। इस प्रकार चौपड़ तथा उससे जुड़ी बाजार पट्टियाँ नगर के पारंपरिक वाणिज्यिक केंद्र का निर्माण करती हैं।

चौपड़ क्षेत्र में खुदरा व्यापार, दैनिक उपयोग की वस्तुएँ, वस्त्र, आभूषण, बर्तन, इलेक्ट्रॉनिक सामान, खाद्य पदार्थ तथा विभिन्न सेवा-आधारित गतिविधियाँ विकसित हुई हैं। इन बाजारों में व्यापारिक गतिविधियों का संकेंद्रण तथा प्रमुख मार्गों का अभिसरण चौपड़ को नगर का प्रमुख वाणिज्यिक केंद्र बनाता है।

पारंपरिक बाजारों में कार्यात्मक विशेषीकरण भी दिखाई देता है। विभिन्न बाजारों में वस्त्र, किराना, आभूषण, बर्तन तथा अन्य वस्तुओं से संबंधित व्यापारिक गतिविधियों का क्षेत्रीय संकेंद्रण पाया जाता है। इससे स्पष्ट होता है कि नगर का केंद्रीय व्यापारिक क्षेत्र केवल सामान्य खुदरा बाजार नहीं है, बल्कि इसके विभिन्न भागों में व्यापारिक विशेषीकरण विकसित हो चुका है।

उभरते हुए वाणिज्यिक उपकेंद्र

श्रीमाधोपुर की वर्तमान आकारिकी में महत्वपूर्ण परिवर्तन यह है कि वाणिज्यिक गतिविधियाँ अब केवल चौपड़ और पारंपरिक बाजारों तक सीमित नहीं हैं। स्टेशन रोड, खंडेला रोड, बाईपास, राज्य राजमार्ग तथा कृषि उपज मंडी के आसपास नए वाणिज्यिक एवं सेवा-आधारित क्षेत्र विकसित हो रहे हैं।

1. स्टेशन रोड पर बैंक, वित्तीय संस्थान, अस्पताल, चिकित्सा सेवाएँ, मेडिकल स्टोर, शैक्षणिक संस्थान, प्रशासनिक कार्यालय, मोबाइल एवं कंप्यूटर प्रतिष्ठान, रेस्टोरेंट तथा अन्य खुदरा गतिविधियों का संकेंद्रण पाया जाता है। इसलिए स्टेशन रोड एक बहु-कार्यात्मक सेवा-वाणिज्यिक धुरी के रूप में विकसित हुआ है।
2. खंडेला रोड तथा बाईपास के आसपास परिवहन-आधारित व्यापारिक गतिविधियों के विकास की प्रवृत्ति दिखाई देती है। इन क्षेत्रों में वाहन मरम्मत, स्पेयर पार्ट्स, भोजनालय, निर्माण सामग्री, पेट्रोलियम सेवाएँ तथा अन्य सड़क-आश्रित गतिविधियों के विकास की संभावना अधिक है।
3. जालपाली मोड़ से राज्य राजमार्ग संख्या 37 के किनारे पुलिया की दिशा में ऑटोमोबाइल रिपेयरिंग इकाइयाँ, वर्कशॉप, सर्विस सेंटर, ऑटो गैरेज, कार डेकोर, ऑटो पार्ट्स तथा टायर-बैटरी संबंधी प्रतिष्ठान विकसित हुए हैं। इस क्षेत्र में कृषि एवं रिक्रिमेंट भूमि की उपस्थिति के कारण यह अभी पूर्ण विकसित वाणिज्यिक पट्टी न होकर उदीयमान परिवहन-वाणिज्यिक कॉरिडोर का स्वरूप प्रस्तुत करता है।
4. कृषि उपज मंडी के आसपास का क्षेत्र कृषि-व्यापार आधारित उपकेंद्र के रूप में उभर रहा है। मंडी ग्रामीण क्षेत्र से कृषि उत्पादों के आगमन, विपणन, भंडारण, परिवहन तथा वितरण का महत्वपूर्ण संपर्क बिंदु है। इसके कारण मंडी क्षेत्र में कृषि-आधारित व्यापार, परिवहन, लोडिंग-अनलोडिंग, पैकेजिंग तथा अन्य सहायक सेवाओं के विकास की संभावनाएँ दिखाई देती हैं।

इन क्षेत्रों को अभी पूर्ण विकसित बहु-केंद्रीय व्यापारिक केंद्र कहना उचित नहीं होगा। इनके लिए "उभरते हुए सड़क-आधारित एवं कार्यात्मक उपकेंद्र" शब्द अधिक उपयुक्त है।

औद्योगिक एवं व्यावसायिक संरचना

श्रीमाधोपुर की औद्योगिक संरचना स्थानीय कृषि संसाधनों, कच्चे माल, परिवहन संपर्क तथा स्थानीय एवं क्षेत्रीय बाजार की मांग से जुड़ी हुई है। नगर के समीप जालपाली क्षेत्र में औद्योगिक गतिविधियाँ विकसित हुई हैं। इसके अतिरिक्त तेल मिल, आटा मिल, ग्रेनाइट, सीमेंट, लोहे, प्लास्टिक पाइप तथा अन्य लघु एवं मध्यम औद्योगिक गतिविधियाँ पाई जाती हैं।

नगर में बर्तन निर्माण, कपड़ों की रंगाई एवं छपाई, लकड़ी का कार्य, मिट्टी के बर्तन, चूड़ी निर्माण, गोटा-कशीदाकारी तथा अन्य घरेलू एवं लघु उद्योग भी विकसित हुए हैं। ग्रामीण क्षेत्र से प्राप्त कृषि उत्पाद नगर की आर्थिक गतिविधियों को आधार प्रदान करते हैं। कृषि उत्पादन के साथ आटा, डेयरी, ग्रेडिंग तथा खाद्य प्रसंस्करण संबंधी गतिविधियों का विकास नगर और उसके ग्रामीण पृष्ठप्रदेश के बीच आर्थिक संबंधों को मजबूत करता है।

नगर के बाहरी भागों में ईट निर्माण की गतिविधियाँ भी स्थानीय मिट्टी एवं क्षेत्रीय बाजार की मांग से जुड़ी हुई हैं। इस प्रकार श्रीमाधोपुर की औद्योगिक संरचना स्थानीय संसाधनों, कृषि अर्थव्यवस्था, परिवहन संपर्क तथा बाजार की आवश्यकता के बीच संबंध को प्रदर्शित करती है।

सार्वजनिक एवं सामुदायिक सुविधाएँ

वर्तमान नगरीय आकारिकी में राजकीय एवं अर्द्ध-राजकीय कार्यालयों, शैक्षणिक संस्थानों, चिकित्सा सुविधाओं, सामाजिक-सांस्कृतिक स्थलों, धार्मिक स्थलों तथा अन्य सामुदायिक सुविधाओं का स्थानिक वितरण महत्वपूर्ण है। इन सुविधाओं के आसपास आवासीय, वाणिज्यिक तथा सेवा गतिविधियों का विकास होता है।

नगर में शैक्षणिक एवं चिकित्सा सुविधाएँ नागरिकों की दैनिक आवश्यकताओं को पूरा करती हैं। धार्मिक एवं ऐतिहासिक स्थल नगर की पारंपरिक पहचान तथा सामाजिक-सांस्कृतिक संरचना को प्रभावित करते हैं। हालांकि, सार्वजनिक सुविधाओं का वितरण सभी क्षेत्रों में समान नहीं है। केंद्रीय भागों में सुविधाओं का संकेंद्रण अपेक्षाकृत अधिक है, जबकि परिधीय क्षेत्रों में कुछ सुविधाओं की उपलब्धता सीमित दिखाई देती है।

जलापूर्ति, जल-मल निकास, ठोस कचरा निस्तारण, विद्युत तथा अन्य जनोपयोगी सेवाएँ नगर के विकास स्तर को प्रभावित करती हैं। इन सुविधाओं में स्थानिक असमानता होने पर नगरीय विस्तार अनियोजित रूप ग्रहण कर सकता है।

परिवहन संपर्क एवं नगरीय विस्तार

श्रीमाधोपुर नगर के विकास में रेल एवं सड़क परिवहन की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। वर्ष 1907 में रेलवे संपर्क स्थापित होने तथा वर्ष 2009 में मीटरगेज से ब्रॉडगेज परिवर्तन के बाद नगर की क्षेत्रीय एवं बाह्य संपर्कता में वृद्धि हुई। रेलवे स्टेशन के आसपास व्यापारिक प्रतिष्ठानों, आवासीय क्षेत्रों तथा परिवहन सेवाओं के कारण मिश्रित भूमि-उपयोग विकसित हुआ। रेलवे विद्युतीकरण एवं समर्पित माल गलियारे से माल परिवहन तथा आर्थिक गतिविधियों को भी प्रोत्साहन मिला।

नगर का बाह्य सड़क परिवहन मुख्यतः राज्य राजमार्ग-37 तथा बाईपास मार्गों पर आधारित है। ये मार्ग श्रीमाधोपुर को जयपुर, रींगस, खंडेला, नीमकाथाना एवं अन्य क्षेत्रीय केन्द्रों से जोड़ते हैं। स्टेशन रोड, राजपथ रोड, खंडेला रोड तथा बाईपास मार्ग नगर के प्रमुख परिवहन मार्ग हैं। इनके किनारे व्यापारिक प्रतिष्ठानों, ऑटोमोबाइल सेवाओं एवं मिश्रित भूमि-उपयोग का विकास हुआ है, जिससे नगर की रैखिक वृद्धि को बढ़ावा मिला।

नगर की आंतरिक परिसंचरण प्रणाली सड़क नेटवर्क एवं गलियों पर आधारित है। पुराने नगर क्षेत्र में संकरी, सघन एवं परस्पर जुड़ी गलियाँ पाई जाती हैं, जबकि नवीन विकसित कॉलोनियों में अपेक्षाकृत चौड़ी एवं व्यवस्थित सड़कें विकसित हुई हैं। केंद्रीय बाजार क्षेत्रों में अनियोजित पार्किंग, अतिक्रमण एवं वाहनों की बढ़ती संख्या के कारण यातायात दबाव और जाम की समस्या दिखाई देती है। इस प्रकार परिवहन तंत्र ने श्रीमाधोपुर के नगरीय विस्तार, भूमि-उपयोग प्रतिरूप तथा आकारिकी को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित किया है।

प्रमुख निष्कर्ष

1. श्रीमाधोपुर की वर्तमान आकारिकी एकरूप नहीं है। केंद्रीय, आंतरिक तथा परिधीय भागों में भूमि उपयोग, बसावट की सघनता तथा नगरीय कार्यों के वितरण में स्पष्ट अंतर पाया जाता है।
2. पुराना केंद्रीय नगर अभी भी प्रमुख कार्यात्मक केंद्र है। चौपड़ तथा उससे जुड़े बाजार नगर के पारंपरिक व्यापारिक एवं सामाजिक संगठन का मुख्य आधार हैं।

- केंद्रीय भाग में सघन एवं मिश्रित भूमि उपयोग पाया जाता है। यहाँ आवासीय, वाणिज्यिक तथा सेवा गतिविधियाँ एक-दूसरे से जुड़ी हुई हैं।
- परिधीय क्षेत्रों में नगरीय विस्तार की प्रक्रिया जारी है। इन क्षेत्रों में कृषि भूमि, रिक्त भूखंड, नवीन आवासीय कॉलोनियाँ तथा ग्रामीण-नगरीय संक्रमण क्षेत्र पाए जाते हैं।
- आवासीय प्रतिरूप में विविधता दिखाई देती है। पुराने भागों में पारंपरिक आवास एवं हवेलियाँ, जबकि नए क्षेत्रों में आधुनिक पक्के भवन तथा योजनाबद्ध भूखंड पाए जाते हैं।
- ग्रामीण आवासीय स्वरूप पूरी तरह समाप्त नहीं हुआ है। बाहरी क्षेत्रों में ढाणी-आधारित आवास और कृषि-आधारित खुला भूभाग अभी भी विद्यमान हैं।
- वाणिज्यिक विकास चौपड़ से बाहर फैल रहा है। स्टेशन रोड, खंडेला रोड, बाईपास, राज्य राजमार्ग तथा कृषि उपज मंडी के आसपास नए वाणिज्यिक उपकेन्द्र उभर रहे हैं।
- वाणिज्यिक विकास का स्वरूप सड़क-आधारित एवं परिवहन-उन्मुख होता जा रहा है। यह प्रवृत्ति नगर के रैखिक विस्तार को बढ़ावा दे रही है।
- श्रीमाधोपुर में बहु-केंद्रीय विकास की प्रारंभिक प्रवृत्ति दिखाई देती है। हालांकि इन नए उपकेन्द्रों को अभी पूर्ण विकसित बहु-केंद्रीय संरचना कहना उचित नहीं होगा।
- सार्वजनिक एवं जनोपयोगी सुविधाओं का वितरण असमान है। केंद्रीय क्षेत्रों में सुविधाओं का संकेंद्रण अधिक तथा बाहरी क्षेत्रों में उपलब्धता अपेक्षाकृत सीमित है।
- हरित क्षेत्र की उपलब्धता सीमित है। इससे नगर में खुले एवं हरित क्षेत्रों के संरक्षण की आवश्यकता स्पष्ट होती है।
- श्रीमाधोपुर पारंपरिक कस्बाई संरचना से संक्रमणशील नगरीय केंद्र की ओर बढ़ रहा है। इसमें पुराने केंद्रीय भाग, नवीन आवासीय क्षेत्र, कृषि भूमि तथा सड़क-आधारित वाणिज्यिक विस्तार एक साथ दिखाई देते हैं।

सुझाव

भूमि उपयोग नियोजन

- कृषि एवं रिक्त भूमि के अनियंत्रित रूपांतरण को नियंत्रित किया जाना चाहिए।
- परिधीय क्षेत्रों में आवासीय विस्तार से पहले सड़क, जलापूर्ति, विद्युत, जल निकास तथा ठोस कचरा प्रबंधन की व्यवस्था सुनिश्चित की जानी चाहिए।
- भूमि उपयोग का वार्डवार अद्यतन अभिलेख तैयार किया जाना चाहिए।
- कृषि भूमि, खुले भूभाग तथा ग्रामीण-नगरीय संक्रमण क्षेत्रों के लिए स्पष्ट नियोजन दिशा निर्धारित की जानी चाहिए।

केंद्रीय बाजार का प्रबंधन

- चौपड़ एवं पारंपरिक बाजारों में यातायात एवं पार्किंग व्यवस्था को व्यवस्थित किया जाना चाहिए।
- पैदल आवागमन के लिए सुरक्षित एवं बाधा रहित मार्ग विकसित किए जाने चाहिए।
- बाजार क्षेत्र में अतिक्रमण नियंत्रण तथा भवनों के मिश्रित उपयोग का नियमन आवश्यक है।
- पुराने भवनों एवं पारंपरिक बाजारों के संरक्षण के साथ आवश्यक पुनर्विकास किया जाना चाहिए।

उभरते वाणिज्यिक उपकेन्द्रों का नियोजन

- स्टेशन रोड, बाईपास, खंडेला रोड तथा कृषि उपज मंडी क्षेत्र के लिए अलग-अलग कार्यात्मक नियोजन किया जाना चाहिए।
- सड़क-आधारित व्यापारिक विकास के साथ पार्किंग, लोडिंग-अनलोडिंग तथा पैदल सुविधाओं का प्रावधान किया जाना चाहिए।
- भारी वाहनों, वर्कशॉप तथा गोदामों के लिए उपयुक्त स्थान निर्धारित किए जाने चाहिए।
- नए वाणिज्यिक उपकेन्द्रों के विकास को अनियंत्रित रेखीय विस्तार से बचाने के लिए नियोजित किया जाना चाहिए।

आवासीय विकास

- नवीन कॉलोनियों में सड़क, नाली, जलापूर्ति, विद्युत तथा सार्वजनिक खुले स्थानों का प्रावधान अनिवार्य किया जाना चाहिए।
- ग्रामीण-नगरीय संक्रमण क्षेत्रों में आवासीय निर्माण के लिए स्पष्ट विकास मानदंड निर्धारित किए जाने चाहिए।
- पुराने सघन क्षेत्रों में भवन सुरक्षा, अग्नि सुरक्षा तथा आपातकालीन पहुँच मार्गों पर ध्यान दिया जाना चाहिए।
- आवासीय क्षेत्रों में छोटे पार्क एवं सामुदायिक खुले स्थान विकसित किए जाने चाहिए।

पर्यावरणीय एवं जनोपयोगी सुविधाएँ

- नगर में हरित क्षेत्र तथा सार्वजनिक खुले स्थानों का विस्तार किया जाना चाहिए।
- वर्षाजल संचयन एवं जल संरक्षण को भवन निर्माण तथा कॉलोनी विकास से जोड़ा जाना चाहिए।
- जल-मल निकास एवं ठोस कचरा प्रबंधन की व्यवस्था को परिधीय क्षेत्रों तक विस्तारित किया जाना चाहिए।
- नालों एवं प्राकृतिक जल निकास मार्गों पर अतिक्रमण को नियंत्रित किया जाना चाहिए।

निष्कर्ष

श्रीमाधोपुर नगर की वर्तमान नगरीय आकारिकी उसके ऐतिहासिक विकास, जनसंख्या वितरण, भूमि उपयोग, आवासीय विस्तार, वाणिज्यिक गतिविधियों, औद्योगिक संरचना, सार्वजनिक सुविधाओं तथा परिवहन संपर्क के संयुक्त प्रभाव से निर्मित हुई है। नगर के केंद्रीय भाग में पुरानी सघन बसावट, चौपड़-केंद्रित पारंपरिक बाजार तथा मिश्रित भूमि उपयोग प्रमुख हैं, जबकि बाहरी भागों में नवीन आवासीय कॉलोनियाँ, कृषि भूमि, रिक्त भूखंड तथा ग्रामीण-नगरीय संक्रमण क्षेत्र पाए जाते हैं।

नगर की वाणिज्यिक संरचना में पारंपरिक केंद्रीय बाजार की भूमिका अभी भी महत्वपूर्ण है, लेकिन स्टेशन रोड, बाईपास, खंडेला रोड, राज्य राजमार्ग तथा कृषि उपज मंडी के आसपास नए वाणिज्यिक एवं सेवा-आधारित क्षेत्र विकसित हो रहे हैं। इससे नगर में रेखीय विस्तार तथा बहु-केंद्रीय विकास की प्रारंभिक प्रवृत्ति दिखाई देती है। हालांकि, इन उभरते हुए उपकेन्द्रों का विकास अभी संक्रमणशील अवस्था में है।

श्रीमाधोपुर एक ऐसे कस्बाई नगर का उदाहरण है जहाँ पारंपरिक नगरीय संरचना और आधुनिक नगरीय विस्तार एक साथ कार्य कर रहे हैं। यदि भूमि उपयोग परिवर्तन, परिधीय आवासीय विस्तार, वाणिज्यिक गलियारों तथा आधारभूत सुविधाओं का विकास नियोजित रूप से किया जाए, तो नगर का विकास अधिक संतुलित, समावेशी एवं सतत बनाया जा सकता है।

संदर्भ सूची

- Singh, R. L. (Ed.). (1975). Urban Geography in Developing Countries. Varanasi: National Geographical Society of India.
- Robinson, H., & Banford, C. G. (1978). The Geography of Transport. Macdonald & Evans.
- Whitehand, J. W. (1981). The Urban Landscape: Historical Development and Management. London: Academic Press.
- Ramachandran, R. (1989). Urbanisation and Urban Systems in India. Delhi: Oxford University Press.
- Kostof, S. (1991). The City Shaped: Urban Patterns and Meanings Through History. London: Thames & Hudson.
- Carter, H. (1995). The Study of Urban Geography (5th ed.). London: Arnold.
- Moudon, A. V. (1997). Urban morphology as an emerging interdisciplinary field. Urban Morphology, 1(1), 3–10.
- Census of India. (1951–2011). Primary Census Abstract: Rajasthan and Sikar District.
- Conzen, M. R. G. (2004). Thinking About Urban Form: Papers on Urban Morphology, 1932–1998. Oxford: Peter Lang.
- Urban Development and Housing Department. (2011). Shrimadhapur Master Plan 2011–2031. Government of Rajasthan.
- Google Earth Pro. (2023). High-resolution Satellite Imagery of Shrimadhapur Town, Rajasthan.
- Researcher. (2025–2026). Field Survey, Direct Observation, Base Map Preparation, Ward-wise Land Use Mapping and Geospatial Analysis of Shrimadhapur Town. Unpublished Research Records.

Endnotes

1. जनसंख्या एवं नगरीय सूचनाएँ भारत की जनगणना (1951–2011), जिला सांख्यिकी कार्यालय तथा नगरपालिका अभिलेखों से प्राप्त की गई हैं।
2. नगर की परिसीमा, भूमि उपयोग, सड़क नेटवर्क एवं विकास क्षेत्रों का विश्लेषण शोधकर्ता द्वारा वर्ष 2025 में तैयार आधार मानचित्र के आधार पर किया गया है।
3. भूमि उपयोग वर्गीकरण, क्षेत्रफल मापन, वार्डवार डिजिटलीकरण एवं विषयगत मानचित्रों के निर्माण हेतु ळववहसम स्तजी ळव की उपग्रह छवियों का उपयोग किया गया है।
4. भूमि उपयोग एवं नगरीय संरचना के सत्यापन हेतु वर्ष 2025–2026 में क्षेत्रीय सर्वेक्षण एवं प्रत्यक्ष अवलोकन किया गया।
5. वर्तमान नगरीय आकारिकी का विश्लेषण भूमि उपयोग, आवासीय प्रतिरूप, वाणिज्यिक विस्तार, सार्वजनिक सुविधाओं एवं परिवहन संपर्क के आधार पर किया गया है।
6. प्रस्तुत मानचित्र, क्षेत्रफल, प्रतिशत विश्लेषण एवं वार्डवार वर्गीकरण शोधकर्ता द्वारा उपग्रह छवियों तथा क्षेत्रीय सर्वेक्षण के आधार पर तैयार किए गए हैं।